बांझपन से मुक्ति दिलाने को तत्पर

डॉ.कंचन अग्रवाल मुरारका

जीवन में सब कुछ होने के बाद भी घर के आंगन में बच्चों की किलकारियां नहीं गूंजने पर जीवन में जैसे अधूरापन का एहसास होता है। विशेषकर संतानहीन होने पर सबसे अधिक महिलाओं को प्रतिकूल स्थित का सामना करना पड़ता है। उसे घर से लेकर समाज के ताने-बाने के बीच अपमान करने की घटनाएं आज भी देखी और सुनी जाती है। पूर्वोत्तर में ऐसे परिवारों के जीवन में खुशियां भरने की दिशा में गोयनका नर्सिंग होम की स्त्री, प्रसूति व बांझपन रोग विशेषज्ञ डा.कंचन अग्रवाल मुरारका पिछले कई सालों से इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) प्रक्रिया के माध्यम से उनके जीवन में संतान सुख का अनुभव कराने में सफल रही हैं। गुवाहाटी के बाबूलाल अग्रवाल व सविता देवी अग्रवाल की सुपुत्री कंचन का जन्म गुवाहाटी में हुआ। कंचन कॉटन कालेज से 12वीं और डिब्रूगढ़ स्थित असम मेडिकल कालेज अस्पताल से एमबीबीएस और पोस्ट ग्रेजुएट की परीक्षा पूरी की। 2000 में गुवाहाटी निवासी स्वर्गीय मदन गोपाल मुरारका व रत्ना देवी मुरारका के सुपुत्र विमल मुरारका के साथ विवाह के बंधन में बंध गई। डा.कंचन चिकित्सा क्षेत्र में व्यस्त हो गई लेकिन समाज में बांझपन को लेकर महिलाओं का अपमान होते देख काफी दुखी हो जाती थी। डॉ.कंचन ने औरतों को बांझपन की पीड़ा से निजात दिलाने के उद्देश्य से इसकी पढ़ाई की और संतानहीन महिलाओं के जीवन खुशियां लाने की ठान ली। डा. कंचन का कहना है कि आईवीएफ प्रक्रिया का सबसे बड़ा लाभ उन दंपति के लिए वरदान है, जो किसी कारणवश माता-पिता बनने में सक्षम नहीं हो पाते। जिन महिलाओं की फैलोपियन ट्यूब में किसी तरह का अवरोध आ जाता है या पुरुषों में स्वस्थ शुक्राणु नहीं बन पाते हैं, तो महिलाएं गर्भधारण नहीं कर पाती हैं। उन्होंने बताया कि समाज में आज भी संतान नहीं होने का सारा दोषी महिलाओं को ही ठहराया जाता है। ऐसी स्थिति से औरतों को उबारने तथा समाज में उन्हें सम्मानजनक तरीके से जीने के लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया है। डॉ.कंचन का कहना है कि अत्याधुनिक तकनीक से बेऔलाद सूनी गोद भी भर सकती है। बशर्ते समय रहते कमजोर शुक्राणु, अंडाशय में कमी व अन्य बीमारियों का समय से जांच व इलाज कराया जाए। डा. कंचन पूर्वोत्तर में लोगों को इस चिकित्सा व्यवस्था के लिए लगातार जागरूक कर रही हैं। जगह-जगह शिविर लगाकर लोगों को समझा रही है कि आईवीएफ प्रक्रिया से उनकी पत्नी मां बन सकती हैं। कंचन ऐसे लोगों को जिसके विवाह के काफी समय बीत जाने के बाद भी संतान नहीं हुई और निराशा से घिरे दांपत्य जीवन बीता रहे थे। उनके कठिन परिश्रम से ऐसे लोगों केआंगन में फिर से उम्मीद की किरण लाने की सफल कोशिश कर रही हैं। इस विषय पर पूर्वोत्तर सहित देश के कई शहरों में आयोजित कार्यशालाओं के जरिए लोगों को जानकारी देने का काम भी कर रही है। पूर्वोत्तर के प्रत्येक क्षेत्र के हर वर्ग के दंपति को आईवीएफ प्रक्रिया से संतान सुख से रूबरू करवा कर उनकी झोली को खुशियों से भर दी है। डॉ.कंचन ने समाज में हो रहे भ्रूण हत्या के खिलाफ भी जोरदार तरीके से अभियान चला रखा है। वे लोगों को सामूहिक तरीके से समझाने का भी काम कर रही हैं और उनके इस अभियान का असर भी देखा जा रहा है। उल्लेखनीय है कि वे मारवाड़ी मेटर्निटी अस्पताल में भी काफी समय काम किया और उस दौरान गरीब मरीजों की पूरी तरह मदद की। यहां तक कि आज भी गरीब मरीजों के लिए अपना फीस माफ कर देती हैं। वे चिकित्सा से हटकर गरीब बच्चों के अध्ययन में मदद करने के साथ ही बनीहाट में पति विमल के साथ सरकारी स्कूलों के गरीब छात्रों को उनकी जरूरतों की सामग्री प्रदान करती आ रही है। गौरतलब है कि कंचन तथा उनके परिवार वृद्धाश्रम सहित जरूरतमंद लोगों को बराबर मदद करते आ रहे है। उनका सपना है कि महिलाओं तथा लड़कियों के लिए और काम करें ताकि समाज में वे भी सम्मानजनक तरीके से सर उठाकर अपनी जिंदगी को जी सकें। ■■

● साक्षात्कार एवं छाया : मदन मोहन महाराज